15 अगस्त, 2009

62 वाँ स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता दिवस की 62 वीं वर्षगाँठ के पुनीत अवसर पर मैं आपको एवं आपके परिजनों को हार्दिक बधाई देता हूँ। इस दिन हमें उन महान नेताओं एवं स्वतंत्र सेनानियों को श्रद्धांजलि देनी है जिन्होंने राष्ट्र निर्माण के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। देश के प्रत्येक नागरिक पर एक विशेष जिम्मेदारी के साथ हमें यह स्वतंत्रता मिली है । हम सब जो आज यहाँ उपस्थित हुए हैं केवल समारोह को मनाने एवं खुशियाँ मनाने के लिए एकत्र नहीं हुए है बल्कि आत्मविश्लेषण के अवसर पर हमारी क्षमताओं एवं असर्थताओं का पुनर्मूल्यांकण करना है जिससे निरंतर हम बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धात्मक विश्व में अपने संस्थागत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भावी प्रशस्त पथ निर्धारित कर सकें । संस्थागत लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें एकजुट होकर भागीदारी के साथ कार्य करना है और महात्मा गाँधी जी को हमेशा स्मरण करना है जो सामूहिक कार्य के प्रतीक हैं । लोगों को एकजुट करने के लिए उनके पास दो विशिष्ट गुण थे : सम्प्रेषण एवं विनम्रता । दल या समूह में विश्वास एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है जिसके बिना कुछ भी संभव नहीं होता है । गाँधीजी इस नीति से भलीभाँति परिचित थे और उन्होंने अपने शांतिपूर्ण अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा आंदोलन में इसका अनुपालन किया था ।

जब से हम स्वाधीन हुए तब से हमारे देश के महान दृष्टाओं ने जिसमें पंडित नेहरू भी शामिल हैं, यह अनुभव किया कि गरीबी उन्मूलन एवं सामाजिक विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है । स्वतंत्रोत्तर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी , भारत को, 60 के दशक के प्रारंभ में खाद्यान्नों के आयात की स्थिति से, खाद्यान्नों के उत्पादन में आत्म निर्भर राष्ट्र के रूप में ले आयी है । परिणामस्वरूप, अनिश्चित वर्षा के कारण फसल न होने की स्थिति एवं सूखे की स्थिति में भी, जैसा कि इस वर्ष हुआ है । यद्यपि हम इससे चिन्तित हैं फिर भी हमें खाद्य-सुरक्षा के लिए घबड़ाने की आवश्यकता नहीं है । हरित क्रान्ति से लेकर चन्द्र मंडल की यात्रा तक अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में कई प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय घटनाएं देखी गईं हैं।

इस दिन 2008 को, यदि आपको स्मरण हो तो, मैं संस्थान के निर्माण की बात कर रहा था । पिछले वर्ष में किए गए कार्यों से और तेजी आई है और अनुसंधान के क्षेत्र में नए मील के पत्थर की स्थापना के लिए हमें प्रेरणा मिली । इस अवधि के दौरान, अनुसधान एवं विकास सुविज्ञताओं के क्षेत्र में सर्व श्रेष्ठ संरचनात्मक विकास को बढ़ावा देने के अतिरिक्त बाह्य निधिक वृहत परियोजनाओं पर विशेष बल देना हमारी प्राथमिकताओं में से एक रहा है । वास्तव में, पिछले तीन वर्षों में किए गए परिवर्तनों से अब फलदायक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं ।

आप को यह जानकर खुशी होगी कि हम जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित शैवाल से जैव डीजल उत्पादन पर एक वृहत परियोजना प्राप्त करने में सफल हो गए एवं 1.23 करोड़ रुपये की पहली किश्त भी प्राप्त हो गई है । यह एक चुनौती पूर्ण अनुसंधान एवं विकास कार्य क्षेत्र है और मैं प्रसन्न हूँ कि संस्थान के इतिहास में पहली बार हमें जैव प्रौद्योगिकी विभाग से प्रतिस्पर्धात्मक बोली के माध्यम से इस तरह का वृहत समर्थन प्राप्त हुआ ।

मैं सीएसआइआर द्वारा हमारे संस्थान को दो अन्य नान नेटवर्क परियोजनाओं की स्वीकृति का अन्य सफलता के रूप में उल्लेख करना चाहता हूँ (1) पहला परतदार पदार्थ अनुसंधान के क्षेत्र में और दूसरा धातुकर्म संसाधनों में अपशिष्ट उपयोग पर । ये दो कार्यक्रम हमारे जल धातुकर्म एवं पदार्थ रसायन के अनुसंधान क्षेत्र में परवर्ती संवेग प्रदान करेंगे ।

हाल ही में, चालू वित्तीय वर्ष के दौरान हम इस्पात मंत्रालय एवं खान मंत्रालय में एक महत्त्वपूर्ण (stakeholder) पणधारी बन गए हैं और मुझे विश्वास है कि उच्च जोखिम - विज्ञान परंतु नवीन अनुसंधान क्षेत्र में कुछ बड़ी परियोजनाएं शीर्घ ही प्राप्त हो सकती हैं ।

विगत समय में सरकारी/निजी क्षेत्र के उद्योगों के साथ हमारे संबंध काफी प्रोत्साहक रहे । हमारे द्वारा किए जा रहे विज्ञान को अर्थनीति के साथ जोड़ने के हमारे प्रयासों के अंतर्गत हमने सर्वश्री एम एन दस्तूर के साथ एक बड़े जलधातुकर्म संसाधन संयंत्र के निर्माण के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। स्तम्भ प्लवन प्रौद्योगिकी का प्रचार-प्रसार करना हमारे अन्य वृहत कार्यों में से एक है। सर्वश्री जिंदल सिद्धांत रूप में हमारे अधिकृत विक्रय एजेन्ट सर्वश्री तेगा इन्डस्ट्रीज से 9 प्लवन स्तम्भ खरीदने के लिए सहमत हुए हैं।

* हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित उड़न राख अनुसंधान सुविधाओं का सृजन कर रहे हैं जो इस वर्ष के दौरान आइ एम एम टी द्वारा लिया गया एक बड़ा कार्यक्रम है

* समन्वय एवं बेहतरअधिगम और संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए मेरे द्वारा किए जा रहे प्रयासों के अंतर्गत **केन्द्रीय अधिलक्षणन प्रकोष्ठ** प्रारंभ किया गया और मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि प्रयोक्ता समूह द्वारा इसकी प्रतिक्रिया काफी उत्साहवर्द्धक रही ।

* विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में वैश्विक प्रवृत्तियों को मद्दे नजर रखते हुए, अनुसंधान के सामरिक क्षेत्रों में आधारभूत संरचना की नींव को सुदृढ़ करने पर मेरा ध्यान केन्द्रित है । जैसा कि आप जानते हैं कि सीएसआइआर से 20 करोड़ रुपये के समर्थन से प्लाज्मा संसाधन के लिए अभिनव केन्द्र की स्थापना की जा रही है। इस केन्द्र को कुछ बड़े उपकरणों जैसे फील्ड इमीशन - एसईएम, हाई टेम्परेचर एक्स रे, प्लाज्मा टॉर्च आदि से सुसज्जित किया जाएगा जो हमारे देश के पूर्वी भाग के लिए अद्वितीय होगा ।

* नए विचारों की खोज के क्रम में एवं प्रमुख क्षेत्रों में चल रही हमारी अनुसंधान गतिविधियों में वृद्धि लाने के उद्देश्य से हम वैज्ञानिक, तकनीकी एवं समर्थन स्तर पर युवा कर्मचारियों की नियुक्ति का दूसरा चरण समाप्त कर चुके हैं । मैं यह मानता हूँ कि इस संस्थान के कुल निष्पादन में वे अवश्य महत्त्वपूर्ण योगदान देंगे ।

* खनिज अभियांत्रिकी में एक वर्ष एवं दो वर्ष का स्तानकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना इस संस्थान का दूसरा महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है । जैसा कि आपको विदित है कि एक वर्ष के पाठ्यक्रम के छात्र हमारे साथ हैं और अब हम दो वर्ष के पाठ्यक्रम के प्रथम बैच के छात्रों के स्वागत की तैयारी में हैं । सभी आवश्यक निवेश यथा आधुनिक छात्रावास, क्रीड़ा स्थल एवं एक सुसज्जित आधुनिक कैंटीन सुविधा उपलब्ध है।

* डॉ. बिकास कुमार जेना एवं डॉ. देबी प्रसाद दास ने हमारे संस्थान की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए , दोनों को ही प्रतिष्ठित राष्ट्रीय युवा वैज्ञानिक अवार्ड से सम्मानित किया गया । एचपीटीएलसी पर डॉ अवधानी के शोध पत्र को पी डी सेठी सर्वश्रेष्ठ पेपर अवार्ड मिला ।

आगे और उल्लेख करने के लिए कई अन्य गतिविधियाँ हैं पर जो सबसे महत्त्वपूर्ण है प्रवर्तन दिवस (इनोवेटिव डे) का अनुपालन । आप सभी जानते हैं कि सीएसआइआर 50 नए विचारों को केन्द्रीभूत करने की पहल की है जिन्हें वह कार्यान्वित करेगा एवं उसके लिए निधि प्रदान की जाएगी । आप सभी इस दिशा में चिन्तन-मनन करें और प्रभावोत्पादन के लिए सम्मिलित विचार प्रस्तुत करें ।

भावी पथ

किसी भी देश के औद्योगिक क्षेत्र में विकास के लिए खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकियों में प्रगति करना पूर्व अपेक्षित गुण है। पदार्थों और संसाधन जो किफायती लागत, पर्या हितैषी एवं ऊर्जा दक्ष हैं उनकी माँग तेजी से बढ़ रही है । भारत की प्राकृतिक संसाधनों के साथ -साथ उनके अनवरत उपयोग की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हम सब के लिए यह अनिवार्य है कि राष्ट्रीय संस्थान के रूप में हम इससे पहले की तुलना में अधिक विश्वसनीय ढंग से अपने पणधारियों की आवश्यकताओं की आपूर्ति करें ।

अगले वर्ष इस दिन तक हमारे पास सम्पूर्ण शैक्षिक आधारभूत संरचनात्मक सुविधाओं के साथ छात्रों का दूसरा बैच परिसर में होगा । प्लाज्मा प्रवर्तन केन्द्र पूर्ण रूप से कार्य करेगा । कुछ प्रभावोत्पादक शोध पत्र एवं प्रौद्योगिकियाँ भी होंगी और निस्सन्देह ही विभिन्न गतिविधियों से चहकता-फुदकता और प्रफुल्लता से भरा परिसर भी होगा । वर्तमान समय में हम मुख्यत: राज्य सरकार की एजेन्सियों के साथ कई लाभदायक साझेदारी किए हैं और हम भविष्य में इस संबंध को सामाजिक रूप से संबद्ध विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी समाधानों के द्वारा और सुदृढ करना चाहते हैं । जीव विज्ञान और जैव पदार्थों के क्षेत्र में हम नए कार्यक्रमों के सूत्रपात करने की प्रक्रिया में हैं । समग्रत: हम सब के लिए भविष्य बहुत ही उत्साहजनक है ।

उपसंहार

जिन उपलब्धियों की प्राप्ति पर आज हम खुशियाँ मना रहे हैं वे भारत एवं विदेशों में हमारी मान्यता -स्तर को ऊपर उठाने के लिए हमारे वृहत्तर लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उठाया गया एक छोटा सा कदम है । हमें मान्यता मिलेगी यदि हम उसके लिए सख्त लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उसकी प्राप्ति के लिए सही कदम उठाते हैं और तभी उचित अवसरों का सृजन किया जाएगा जो हमें विजय पथ की ओर ले जाएगा ।

अंत में, मैं इस समारोह में भाग लेने के लिए आप सब को धन्यवाद देना चाहता हूँ और मैं दलगत कार्य के महत्त्व को एक बार पुन: दोहराता हूँ । कई गुणों को जिन्हें हम संजोये रखें हैं और बहुत महत्त्व देते हैं उनसे हमारी पहचान एक राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास संगठन के रूप में हुई है । आधुनिक अनुसंधान एवं विकास उस स्तर तक पहुँच गया है जहाँ व्यक्तिगत रूप से कोई विशेष कार्य नहीं कर सकेगा परंतु सामूहिक रूप से यह संभव हो सकता है । मैं प्रत्येक व्यक्ति से मूल्य-परम्परा को और सुदृढ करने के लिए कहता हूँ जहाँ हमारे कार्य एवं व्यवहार संस्थागत पहचान के रूप में प्रतिबिम्बित हो सके । यह सब दलगत कार्य से संभव है और एक जुट होकर कार्य करने की भावना से है चाहे हम अलग-अलग ही क्यों न हो ।

जय हिन्द